Sem-I st. Paper-III rd



Unit - I

## 1.2 लोकतान्त्रिक, धर्म निरपेक्ष, समानतावादी तथा मानवीय समाज में भारतीय शिक्षा के उद्देश्य
## (Aims of Indian Education in the Context of a Democratic, Secular, Egalitarian and a Human Society

**2. एक अच्छे उद्देश्य की कसौटी क्या है? शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकता और महत्त्व की विवेचना कीजिये।**

*अथवा*

**उद्देश्य के अर्थ को स्पष्ट करते हुये एक-एक अच्छे उद्देश्य की कसौटी को लिखें तथा शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकता महत्त्व का वर्णन करें।**

*अथवा*

**शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकता और महत्त्व क्यों हैं? उचित तथ्यों के आधार पर पुष्टि कीजिये।**

उत्तर–किसी भी विषय के प्राप्य-उद्देश्यों को जानने से पहले उद्देश्यए और विषय दोनों का एक ही अर्थ लगाया ज है, परन्तु ऐसा नहीं है। इसके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इनकी पृथक-पृथक परिभाषाएँ तथा उनके अन्तर को दिया जा रहा है–

**उद्देश्य का अर्थ (Meaning of aim)**–इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने लिखा है–**"उद्देश्य पूर्व-निर्ध साध्य होता है, जो किसी कार्य या क्रिया का मार्गदर्शन करता है।"**

**प्राप्त उद्देश्य का अर्थ (Meaning of objective)**–जब हम किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये कार्य करते हैं, उसके लिए हमें जिन छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखना पड़ता है, उन्हें उस उद्देश्य के प्राप्य उद्देश्य कहते हैं। प्राप्य–उद्दे के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने लिखा है–"प्राप्य **उद्देश्य वह मानदण्ड या साध्य है, जिसको छात्र द्वारा विद्या क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जाता है।"**

### उद्देश्य तथा प्राप्य उद्देश्य में अन्तर *(Difference between Aim and Objective)*

| | उद्देश्य (Aim) | प्राप्य–उद्देश्य (Objectives) |
|---|---|---|
| (क) | उद्देश्य का क्षेत्र व्यापक होता है। | प्राप्य-उद्देश्य का क्षेत्र सीमित होता है। |
| (ख) | उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण विद्यालय-कार्यक्रम, समाज तथा राष्ट्र-उत्तरदायी होता है। | प्राप्य-उद्देश्य लक्ष्य की छोटी छोटी शाखाएं होती हैं। इनकी प्राप्ति का दायित्व शिक्षक तथा पाठ्य विषय-व पर होता है। |
| (ग) | उद्देश्य में आदर्शवादिता होती है। इसे पूर्ण रूप से प्राप्त करना सम्भव नहीं है। | प्राप्य-उद्देश्य की प्राप्ति सम्भव है क्योंकि इन व्यावहारिकता होती है। |
| (घ) | उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक समय लगता है। | प्राप्य-उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक समय नहीं लगता |

### एक अच्छे उद्देश्य की कसौटी *(Criteria of a Good Aim)*

जान–डीवी ने अपनी पुस्तक *'Democracy and Education'* में उद्देश्यों की निम्नलिखित विशेषताएं दी है–

(1) अच्छे उद्देश्य का सम्बन्ध जीवन की वास्तविक स्थितियों से होता है और उनकी प्राप्ति केवल उन्ही स्थितियों में सकती है।

(2) अच्छे उद्देश्य लचीले होते हैं। जीवन स्थितियां सदा बदलती रहती हैं और उद्देश्य उन बदलती हुई स्थितियों अनुसार होने चाहिए।

(3) अच्छे उद्देश्य सदा विभिन्न क्रियाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें मनोरथपूर्ण प्रक्रिया निहित होती है। उनका ह वर्तमान आश्वयकताओं के अनुसार होना जरूरी है तथा उन्हें हमारे जीवन दर्शन से बल प्राप्त होना चाहिए।

शिक्षा में उद्देश्यों की आवश्यकता को जानने से पहले यह समझना आवश्यक बन जाता है। कि उद्देश्यों का अर्थ क्या है? तथा अच्छे उद्देश्य की कसौटी क्या है? जान डीवी के शब्दों में उद्देश्य एक पहले सोचा हुआ लक्ष्य है, जो किसी क्रिया को दिशा प्रदान करता है। जीवन के प्रत्येक पहलू अथवा गतिविधि के समक्ष एक उद्देश्य होता है। किसी गतिविधि तथा उसके उद्देश्य के मध्य गहरा सम्बन्ध होता है। जब हम गतिविधि के उद्देश्य की चर्चा करते हैं, तो यह अनुमान लगाया जाता है कि हमारे सामने एक निशाना है, जिसकी प्राप्ति के लिए गतिविधि को एक मोड़ दिया जाता है। उद्देश्य चेतन मनोरथ होता है, जिसे हमें गतिविधि का कार्य करते समय सामने रखना पड़ता है। हम अपने मन को किसी विशिष्ट निष्कर्ष पर लगा देते हैं और यह इच्छित मनोरथ होता है। शैक्षिक तानेबाने के निम्न तीन पहलू हैं–

**शैक्षिक प्रक्रिया**
**(Education Process)**

- शिक्षा क्यों (उद्देश्य)
- शिक्षा कैसे (शिक्षण विधियाँ)
- शिक्षा में क्या (पाठ्यक्रम)

*शैक्षिक प्रक्रिया के इन तीनों पहलुओं में से उद्देश्य का पहलू सबसे अधिक महत्त्व रखता है। ऐसा इसलिए है कि शिक्षण विधियाँ तथा शैक्षिक पाठ्यक्रम भी उद्देश्यों पर ही निर्धारित होते हैं।* शिक्षण विधियों और शिक्षा के उद्देश्यों के बीच सम्बन्ध का ही एक उदाहरण ले लीजिए। यदि हमें इस बात का निर्णय देने को कहा जाए कि भाषण विधि तथा वाद-विवाद विधि में से कौन-सी विधि अधिक बढ़िया है तो किसी विधि को बढ़िया या घटिया कहने से पहले हमें इस बात का निर्णय करना होगा कि शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं? यदि हम कह देते हैं कि वाद-विवाद विधि, भाषण विधि से अधिक उत्तम है और हमसे ऐसा कहने का कारण पूछा जाता है तो निश्चित ही हमारा उत्तर होगा कि भाषण विधि में तो केवल अध्यापक ही सक्रिय होता है और छात्र निष्क्रिय और यदि एक बार फिर हमसे पूछा जाए कि छात्रों का शिक्षण-प्रक्रिया में सक्रिय होना क्यों आवश्यक है तो स्वाभाविक है कि हमारा उत्तर यह होगा कि हमारे देश में प्रजातंत्र शासन प्रणाली है और प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि छात्रों के अंदर 'स्वतन्त्र विचारधारा' तथा 'तार्किक निर्णय' करने की शक्ति नहीं होगी। 'स्वतंत्र विचारधारा' तथा 'तार्किक निर्णय' के गुण वाद-विवाद विधि के अपनाने से ही विकसित हो सकते हैं। इसी प्रकार पाठ्यक्रम भी शिक्षा के उद्देश्यों पर ही निर्भर करता है।

## शिक्षा के उद्देश्यों का महत्त्व तथा आवश्यकता *(Importance and Necessity of Educational Aims)*

शिक्षा को उद्देश्यों की उसी प्रकार आवश्यकता है जैसे पौधे को धूप की, मानव को जल, वायु, अन्न, आदि की। बिना उद्देश्य के अध्यापक को अध्यापन प्रणाली लड़खड़ा जाती है। विद्यार्थी मंजिल से भटक जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार करने की गूंज हर क्षण आती रहती है। इसका मुख्य कारण ठीक उद्देश्यों की अज्ञानता है।

शिक्षा एक मनोरथपूर्ण तथा नैतिक प्रक्रिया है, अतः इसका उद्देश्यों के बिना विचार करना उचित नहीं। हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में उद्देश्यों के बिना नहीं चल सकते। कोई भी शिक्षा प्रणाली, जिसे अपने उद्देश्यों का पता नहीं अथवा जिसके उद्देश्य अच्छे नहीं होते, अवश्य ही असफल रहेगी। शिक्षा में उद्देश्यों की बहुत ही अधिक आवश्यकता है और इसके मुख्य कारण इस प्रकार से हैं–

**(1) प्रयत्नों का निर्देशन**–यदि हमें अपने उद्देश्यों का पता है तो हम अपने यत्न उस ओर लगा सकते हैं। शिक्षा के उद्देश्य अध्यापक तथा विद्यार्थियों को ठीक रास्ते पर चला सकते हैं।

**(2) अपव्यय दूर करना**–शिक्षा के उद्देश्य हमारे समय तथा शक्ति को नष्ट होने से बचाते हैं तथा कार्य को बुद्धिमता से करने में सहायता देते हैं।

**(3) स्व-मूल्यांकन**–शैक्षिक उद्देश्य हमें स्व-मूल्यांकन करने में सहायता करते हैं।

**(4) वर्तमान स्थितियों का मूल्यांकन करना**–शिक्षक वर्तमान स्थितियों जैसे पाठ्य–सामग्री, शिक्षण, शिक्षण विधियों अध्यापक को कुशलता, पुस्तकालय का साज-सामान तथा पाठ्य-सम्बन्धी अन्य क्रियाओं को उद्देश्यों की रोशनी में मूल्यांकन करते हैं त भविष्य के लिए योजना बनाते हैं। अतः उद्देश्य शिक्षा की प्रक्रिया में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते हैं। उचित उद्देश्य का अभा सारी शिक्षा प्रणाली को दूषित कर देता है।

**(5) कुशल स्कूल प्रबन्ध और गठन के लिए**–उद्देश्यों से स्कूल के प्रबन्ध तथा गठन में सहायता मिलती है। स्कूल प्रबन्ध विभिन्न पक्षों, अध्यापकों का उचित चुनाव, उचित पाठ्यक्रम की योजना उचित प्रयोगशालाओं की व्यवस्था, पाठ्य क्रियाओं त सहायक पाठ्य-क्रियाओं का उचित आयोजन, शिक्षा प्रक्रिया की उचित प्रेरणा का शिक्षा के उद्देश्यों द्वारा ही मार्ग दर्शन होता है

**(6) उद्देश्य अध्यापकों को कार्य रेखा प्रदान करते हैं**–स्कूल से सम्बन्धित कर्मचारियों में अधिकांश संख्या अध्यापकों की जब तक शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों के प्रति सभी अध्यापक सचेत न हों, स्कूल की समूची शिक्षा योजना व्यर्थ सिद्ध होगी। उद्देश को सामने रखकर अध्यापक कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करते हैं और शिक्षा एक सम्मिलित कार्य बन जाता है, परन्तु शिक्षा विशिष्ट उद्देश्य स्वयं अध्यापक को विद्यार्थियों की योग्यताओं, रुचियों तथा अवश्यकताओं के अनुसार निर्धारित करने चाहिए

**(7) उद्देश्य विद्यार्थियों के काम को दिशा और उत्साह प्रदान करते हैं**–जैसे-जैसे विद्यार्थियों का सामान्य एवं शिक्षा सम्बन विकास होता है, वे शिक्षा की आवश्यकता के बारे में सोचने लग जाते हैं। एक बार उन्हें ठीक से उद्देश्य बता दिए जाएं तो उ उद्देश्यों की पूर्ति में सहयोग देने लगेंगे।

**(8) उद्देश्य के कारण ही माता-पिता तथा सामान्य जनता स्कूल के कार्यों की प्रशंसा करती है**–समाज निश्चित उद्देश की दृष्टि से ही स्कूल के कार्यों का अवलोकन करता है वह उन उद्देश्यों का आलोचनात्मक विश्लेषण करके कई प्रकार से ठो सुझाव दे सकता है। स्कूल के अधिकारियों का ध्यान इस ओर दिला सकता है कि निर्धारित उद्देश्य सामाजिक आवश्यकताओं अनुकूल है या नहीं। प्रजातन्त्रात्मक समाज के महान उद्देश्यों में अध्यापकों, विद्यार्थियों, शिक्षा-शास्त्रियों तथा सामान्य जनता सम्मिलित उत्तरदायित्व है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उद्देश्य उन सशक्त बीजों के समान है, जिनसे सुपरिभाषित शिक्षा-नी का निर्माण होता है। उद्देश्यों के ज्ञान के बिना शिक्षक एक ऐसे नाविक के समान होता है, जिसे अपनी मंजिल मालूम नहीं हो और बच्चा ऐसे पतवार विहीन जहाज के समान होता है, जो किनारों से दूर भटकता रहता है। शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट क के लिए **जान डीवी** के ये शब्द बहुत उल्लेखनीय हैं **"किसी उद्देश्य को स्थापित करने का अर्थ है–स्वचालित मशीन के सम नहीं, बल्कि सार्थक रूप से काम करना। इसका अर्थ है कुछ करना और किए हुए काम को उसके अनुसार समझना। उद्देश्य ए पूर्वदृष्ट, अन्तःक्रिया होती है, जो क्रिया को दर्शन प्रदान करती है, यह किसी दर्शक का निष्क्रय दृष्टिकोण नहीं, बल्कि यह अ तक पहुंचने के प्रत्येक पग को प्रभावित करती है।"**

**9. राष्ट्रीय विकास के लिए उद्देश्यों की आवश्यकता**–शिक्षा राष्ट्रीय विकास की आधारशिला है। उद्देश्य रहित शिक्षा प्रणा से कभी भी राष्ट्रीय विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। शिक्षा के उद्देश्यों को दृष्टि में रख कर हम राष्ट्रीय विकास मूल्यांकन कर सकते हैं। क्या राष्ट्र प्रगति की ओर जा रहा है या विनाश की ओर जा रहा है?

**10. उद्देश्य अध्यापकों को निर्देशन प्रदान करते है (Aims impart guidance to the teachers)**–अध्याप को पता चलता है कि उन्हें किस मार्ग पर जाना है। उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही अध्यापक अपने आपको राष्ट्र निर्माता सि करने का प्रयत्न करते हैं।

**11. तकनीकी युग में उद्देश्यों की महत्ता (Importance of aims in teachnological age)**–तकनीकी में मानव जीवन बहुत जटिल हो गया है। तकनीक के कारण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक धार्मि परिवर्तन आदि देखने को मिलते हैं। यदि शिक्षा इन परिवर्तनों के अनुरूप अपने उद्देश्यों में परिवर्तन नहीं करती तो हम तकनी युग की मांग को कभी भी पूरी नहीं कर सकते।

**12. राष्ट्रीय एकता के लिए उद्देश्यों की आवश्यकता है (Aims are necessary for national integration)** शताब्दियों की दासता के पश्चात् आज हम स्वतन्त्र रूप से विचरण कर रहे हैं। यदि शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता निर्धा नहीं किया जाए तो हम फिर दासता की जंजीरों में जकड़े जायेंगे। इस उद्देश्य की ठीक जानकारी के बिना राष्ट्रीय एकता का बी कभी नहीं बोया जा सकता।

**13. उद्देश्य स्कूल संगठन के मूल्यांकन में सहायता करते हैं (Aims help in evaluating the scho organisation)**–शिक्षा के उद्देश्यों से स्कूल संगठन का मूल्यांकन किया जा सकता है। क्या पाठ्यक्रम उचित है? अध्यापकों का चुनाव योग्यता तथा अनुभव को ध्यान में रखकर किया गया है? सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का मूल्यांकन उद्देश्य निर्धा के पश्चात ही होता है।

**14. उद्देश्य स्कूल कार्यक्रम का मूल्यांकन करने में समाज की सहायता करते हैं (Aims help the society to evaluate the school programmes)**–समाज निश्चित एवं पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर स्कूल कार्यक्रम का मूल्यांकन करता है। उचित कार्यों की प्रशंसा करता है और अनुचित के प्रति आवाज उठाता है जिससे स्कूल का काम सुचारू रूप से चलता है।

आधुनिक शिक्षा के एनसाईकलोपीडिया ने उद्देश्य की महत्ता का उल्लेख इन शब्दों में किया है, **"शिक्षा एक मनोरथपूर्ण तथा नैतिक सरगर्मी है। अतः इसका उद्देश्यों के बिना विचार करना उचित नहीं।"**

**15. सूर्य की भांति उद्देश्य हमारे जीवन में प्रकाश करते हैं।** बिना शिक्षा के उद्देश्यों के सर्वांगीण विकास कोरी कल्पना ही है। बच्चों को जब शिक्षा प्रदान करने का विशेष साधन माना जाता था तब शिक्षा में औपचारिक पक्ष का समावेश नहीं हो पाया था। उद्देश्यों की महता को उजागर करने की बात स्कूल के प्रकाश में आने के बाद आई। मानवे ने जैसे-जैसे अपने मस्तिष्क का प्रयोग किया, वैसे ही मानव जीवन में, मानवीय वातावरण में जटिलता आने लगी। शैक्षिक क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आए। औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक शिक्षा के प्रकार, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम शिक्षा की सार्वभौमिकता के प्रयास, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना आदि के प्रति नए-नए प्रयास होने लगे। इन सब कारणों से शिक्षा के अनेक उद्देश्य निर्धारित करने का प्रयत्न होने लगा। क्या शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत उद्देश्य हो या सामाजिक? आदि कई प्रश्न मस्तिष्क में घूमने लगे। इन्हीं कारणों से शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकता की कमी को नहीं भुलाया जा सकता।

◆◆◆

---

**2. शिक्षा से सम्बन्धित उद्देश्यों के महत्त्वपूर्ण आधार कौन-कौन से हैं? विवेचना कीजिये।**

*अथवा*

**शिक्षा के उद्देश्यों के मुख्य आधारों का वर्णन कीजिये।**

*अथवा*

**शिक्षा के उद्देश्य कौन-कौन सी विचारधाराओं पर आधारित हैं? स्पष्ट कीजिये।**

---

उत्तर–शिक्षा के उद्देश्यों की आधारभूमि कई स्तम्भों पर खड़ी है। हमारे देश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक वातावरण देखने को मिलता है। इसके साथ ही प्रत्येक मनुष्य का जीवन दर्शन भी विभिन्न प्रकार का होता है। दार्शनिक अपने अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण करते हैं। राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक तथा पूंजीवादी पृथक्-पृथक् विचारधाराओं में विश्वास रखते हैं। इसलिए शिक्षा सम्पूर्ण समाज की अवस्था को देखकर ही उद्देश्यों का निर्माण करती है।

**शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित विचारधाराओं पर आधारित हैं–**

**1. सामाजिक विचारधारा (Social Ideology)**–हमारे देश में लोकतांत्रिक समाज की कल्पना की जाती है। इसी प्रकार सामाजिक रीति-रिवाज, सामाजिक परम्पराएं, सामाजिक समस्याएं समाज को प्रभावित करती हैं। हम यहाँ पर सती-प्रथा, दहेज प्रथा, बाल-विवाह आदि कुप्रथाओं का विरोध करते हैं। शिक्षा के उद्देश्य इन सब समस्याओं के द्वारा प्रभावित होते हैं। इसीलिए शिक्षा ने अपना उद्देश्य सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकता निर्धारित किया है।

**2. धार्मिक विचारधारा (Religious Ideology)**–धर्म भी शिक्षा के उद्देश्यों को प्रभावित करता है। भारत में अनेक धर्मों के लोग पाए जाते हैं परन्तु मानव धर्म को सबसे उचित स्थान प्राप्त है। हमारा देशधर्म निरपेक्ष राज्य है। इसलिए शिक्षा ने अपना उद्देश्य नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास निर्धारित किया है।

**3. राजनीतिक विचारधारा (Political Ideology)**–शिक्षा के उद्देश्य राजनीतिक विचारधारा पर आधारित होते हैं। जिस देश की जैसी राजनीति होती है, उसी पर आधारित शिक्षा के उद्देश्य होते हैं, जैसे भारत लोकतांत्रिक दृष्टिकोण में विश्वास करता है, इसीलिए शिक्षा ने अपना उद्देश्य लोगों में लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास निर्धारित किया है। रूस तथा चीन साम्यवादी दृष्टिकोण में विश्वास रखते हैं, वहाँ पर शिक्षा का उद्देश्य साम्यवादी दृष्टिकोण का विकास करना है।

**4. वैज्ञानिक विचारधारा (Scientific Ideology)**–हम वैज्ञानिक युग में से गुजर रहे हैं। शिक्षा ने अपना उद्देश्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास निश्चित किया है। तभी हम आधुनिकीकरण की क्रिया को तीव्र करने, वैज्ञानिक शिक्षा, विज्ञान का उत्पादक प्रक्रिया में प्रयोग की बात करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना राष्ट्रीय एकता आदि की बात शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात् ही की जाती है।

**5. दार्शनिक विचारधारा (Philosophical Ideology)**–शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण प्रचलित जीवन दर्शन अनुसार होता है। आदर्शवादी आत्मानभूति को शिक्षा का उद्देश्य बताते हैं तो प्रकृतिवादी आत्म अभिव्यक्ति को शिक्षा का उद्दे निर्धारित करते हैं। प्रयोजनवादी सामाजिक कुशलता को शिक्षा का उद्देश्य बताते हैं। आशावादी दर्शन आशावादी उद्देश्य प्रद करता है। निराशावादी दृष्टिकोण निराशावादी उदेश्य शिक्षा को प्रदान करता है।

**6. मनोवैज्ञानिक विचारधारा (Psychological Ideology)**–मनोवैज्ञानिक विचारधारा नवीन विचारधारा है। इसलि कहा जाता है शिक्षा के उद्देश्य बच्चों की रुचियों, आवश्यकताओं तथा इच्छाओं के अनुकूल होने चाहिएं। जीवन से सम्बन्धित हो चाहिएं। उद्देश्यों में लचीलापन होना चाहिए। यह सब मनावैज्ञानिक कारक हैं।

**7. आर्थिक विचारधारा (Economic Ideology)**–आर्थिक विचारधारा शिक्षा के उद्देश्यों को प्रभावित करती है। बेरोजगारी, निर्धनता, खाद्य आदि समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं। हमारा देश विकसित अवस्था में है। उत्पादकता में वृद्धि गम्भीर समस्या है। यही कारण है कि भारतीय शिक्षा आयोग ने आर्थिक समस्याओं को देखते हुए शिक्षा का उद्देश्य उत्पादक में वृद्धि बताया। शिक्षा का उद्देश्य व्यावसायिकता पर आधारित है।

**सारांश (Conclusion)**–अतः सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के उद्देश्य समाज को दृष्टि में रख ही बनाए जाते हैं, जैसे-जैसे सामाजिक परिस्थितियां बदलती हैं वैसे ही शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन आ जाता है परन्तु व्यक्ति का भी ध्यान रखा जाता है।

**रस्क (Rusk)** ने भी सुन्दर शब्दों में कहा है, **"सामाजिक वातावरण के बिना व्यक्तित्व का कोई मूल्य नहीं और अस्ति अर्थहीन है।"** *("Individuslity is of no value and personality is a meaning less term apart from soci environment."—**Rusk**)*

**मैकाइवर (MacIver)** ने ठीक कहा है, "समाजीकरण तथा व्यक्तिकरण एक प्रक्रिया के दो पहलू हैं।" *(Socializatio and individual lisation are the two sides of a single process.—**MacIver**)*

◆◆◆

**4. शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित करने वाले महत्त्वपूर्ण तत्त्व या कारकों की विवेचना कीजिये।**

*अथवा*

**शिक्षा से सम्बन्धित उद्देश्यों को कौन-कौन से तत्त्व या कारक निश्चित करते हैं? स्पष्ट कीजिये।**

*अथवा*

**शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित करने में कौन-कौन से तत्त्व या कारक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं? वर्णन करो।**

**उत्तर–**

## शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित करने वाले तत्त्व या कारक
## *(Factors determining Educational Aims)*

शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित करने वाले तत्त्वों की खोज करने का अभिप्राय इस बात की खोज करना है कि शिक्षा उपलब्धि क्या होनी चाहिए? शिक्षा-सम्बन्धी खोजों ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा के उद्देश्य आकाश से नहीं गिरते शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित करने के लिए कई तत्त्वों ने योगदान दिया है और दे रहे हैं। शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित क वाले महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का निम्नलिखित शीर्षकों द्वारा अध्ययन किया जा सकता है।

**(1) प्रचलित जीवन-दर्शन या वास्तविकता की प्रकृति सम्बन्धी दृष्टिकोण**–शिक्षा के उद्देश्यों का प्रचलित जीवन दर्शन साथ सीधा सम्बन्ध होता है। उदाहरण के तौर पर प्रकृतिवादियों का विश्वास है कि यह संसार यांत्रिक रूप से अनुशासित है बाह्य भौतिक अस्तित्व ही वास्तविक है और व्यक्ति की भावनाएं, प्रवृत्तियाँ तथा संवेग ही उसकी वास्तविकता है। इस विश्वास आधारित शिक्षा व्यक्ति की आत्माभिव्यक्ति और आत्म-तुष्टि को अपना उद्देश्य बनाती है। इस दर्शन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य तात्कालिक होते हैं अन्तिम नहीं और व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों तथा संवेगों पर बाधारहित तुष्टि ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है

दूसरी ओर आदर्शात्मक दृष्टिकोण आध्यात्मिकता को ही वास्तविकता और ईश्वर को एक मात्र सत्य मानता है। इस दार्शनिक के अनुसार मनुष्य पूर्णता के लिए प्रयास करता है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य है प्राकृतिक मानव को आदर्श मानव में करना। इस दृष्टिकोण के अनुसार आत्मानुभूति व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास तथा बच्चे में निहित आध्यात्मिक शक्ति टीकरण ही शिक्षा का उद्देश्य है।

इसी प्रकार प्रयोगवादी दृष्टिकोण शिक्षा जीवन को व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया मानता है। इसके अनुसार शिक्षा द्व को वह योग्यता प्राप्त होनी चाहिए, जिससे कि वह अपने वातावरण पर नियन्त्रण रख सके और अपनी सम्भावनाओं कर सके। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित करने में महान दार्शनिकों के दृष्टिकोणों का सशक्त स्थान है।

(2) **मानव–प्रकृति से सम्बन्धित विचार**–मानव प्रकृति के सम्बन्ध में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराएं प्रकाट की गई हैं। वास्तव प्रकृति असदृश तत्त्वों का सम्मिश्रण है, जैसे–न्यायसंगत बुद्धि, तर्कहीन बुद्धि, संवेग मूल-प्रवृत्तियां तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति शिक्षा के उद्देश्य प्रायः मानव-प्रकृति के किसी एक तत्त्व पर निश्चित किए जाते रहे हैं। आदर्शवादियों का विचार है कि प्रकृति मूलतः न्यायपूर्ण, अच्छी तथा आध्यात्मिक है। उनका विश्वास है कि आध्यात्मिक प्रकृति का सर्वोच्च विकास तथा प्रवृत्तियों का दमन ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। **रूसो** जैसे प्रकृतिवादी मानव प्रकृति को मूलतः पाशविक समझते जिसमें मूल प्रवृत्तियां, संवेग, भावनाएं तथा इच्छाएं सम्मिलित हैं। इनके अनुसार बच्चे को आत्माभिव्यक्ति तथा आत्म-तुष्टि के प्रदान करना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इसी प्रकार शिक्षा के इतिहास के सभी युगों में इस प्रकार की विभिन्न धाराएं चलती रही हैं। अतः शिक्षा का कोई एक उद्देश्य नहीं हो सकता।

(3) **राजनैतिक विचार तथा व्यक्ति और राज्य सम्बन्ध**–शिक्षा के उद्देश्यों को निश्चित करने में राजनैतिक उद्देश्यों का भी पूर्ण स्थान होता है। यदि देश में प्रजातन्त्र है, तो शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के अन्दर प्रजातान्त्रिक नागरिकता पैदा करना है। इसके विपरीत यदि देश में अधिनायकवाद है, तो शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को आज्ञाकारी बनाना है। इस प्रकार विभिन्न विचारों, प्रजातन्त्रवाद, अधिनायकवाद, सर्वाधिकारवाद, साम्यवाद, निरकुंशवाद आदि के अनुसार राज्य में शिक्षा के उद्देश्य किए जाते हैं। इतिहास साक्षी है कि जब दर्शनिकों की शिक्षा सम्बन्धी विचारधाराएं तथा शासकों की विचारधाराओं में होता तो दार्शनिकों पर अत्याचार किए जाते हैं। **अरस्तू** को विष का प्याला पीना पड़ा था, क्योंकि उसकी शिक्षाएं शासकों के विरुद्ध समझी जाती थीं। **रूसो** को बागी घोषित कर दिया गया था, क्योंकि वह बच्चे को समाज के बाहर शिक्षा चाहता था। उसका विचार था कि समाज बच्चे को भ्रष्ट करता है और मानव व्यक्तित्व के स्वतन्त्र विकास में बाधक है। प्रकार चीन देश अपने इतिहास से कनफ्यूशियएस को निकाल देना चाहिता था, क्योंकि उसके विचार माओवाद के विरुद्ध थे।

शिक्षा के उद्देश्य व्यक्ति और राज्य के परस्पर सम्बन्ध पर भी निर्भर करते हैं। उदाहरण के तौर पर यदि प्रजातन्त्र राज्य है, में व्यक्ति को अपने विचारों को प्रकट करने की स्वतन्त्रता होती है। क्योंकि समय-समय पर विचार बदलते रहते हैं, इसलिए तन्त्रात्मक शिक्षा के उद्देश्य भी लचीले होते हैं। इसके विपरीत यदि सर्वाधिकार सम्पन्न राज्य है, तो व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं होती। ऐसे राज्य में शिक्षा व्यक्ति को शासकों की आज्ञाओं का अंधानुकरण करना सिखाती है। इस प्रकार शासन व्यवस्था में व्यक्ति केवल एक साधन मात्र होता है और राज्य की सत्ता सर्वोच्च होती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति को के उद्देश्यों के अनुसार ही शिक्षा प्रदान की जाती है। इस शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति की रुचियों, योग्यताओं और प्रवृत्तियों की कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इस प्रणाली में यह विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति का हित इसी में है कि वह राज्य के के लिए काम करे। उसे राज्य के लिए जीना और मरना चाहिए, क्योंकि राज्य ही समस्त जीवन क्रियाओं का स्रोत है। ऐसी सिद्धान्त बोध का साधन बन जाते हैं, और राज्य के आदर्शों का प्रचार करने के लिए ही स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकों को फिर जाता है, जिनमें राज्य के अधिकार को स्थिर रखा जाता है।

(4) **सामाजिक तथा आर्थिक समस्याएं**–शिक्षा के उद्देश्य अधिकतर किसी देश की सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं पर करते हैं। शिक्षा का कार्य ही देश की सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का समाधान करना है। इसलिए शिक्षा प्रणाली ऐसी चाहिए, जो युवकों को प्रचलित सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में रहने की योग्यता प्रदान करे, नहीं तो कई ऐसी समस्याएं हो जाती हैं, जो समाज के प्रगतिशील दृष्टिकोणों को नष्ट कर देती हैं। शिक्षा एक ऐसी शक्ति है, जो सामाजिक और समस्याओं को बिना हिंसा करके समता, सहयोग तथा समाजवादी आदर्शों पर समाज का निर्माण करती है उदाहरण के आज भारत में धार्मिक तनाव है, निर्धनता है तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इसलिए कोठारी आयोग ने शिक्षा के में उत्पादन बढ़ाना, आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा, देश में सामाजिक और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने की सिफारिश की है।

**(5) ज्ञान की खोज**–शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करते समय ज्ञान के विकास की ओर भी ध्यान दिया जाता है। यहाँ है कि आधुनिक शिक्षा विज्ञान केन्द्रित है। अनेक अन्य देशों के समान भारत में भी स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों की शि विज्ञान केन्द्रित बनाने पर जोर दिया गया है। विज्ञान की शिक्षा के लिए सरकार उदारतापूर्वक अनुदान तथा छात्रवृत्तियां दे इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करने में ज्ञान के प्रसार का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

**(6) समाज की धार्मिक विचारधारा**–धर्म और शिक्षा के उद्देश्यों में भी बहुत सम्बन्ध है। यदि कोई देश धर्म-निरपेक्ष राज्य में शिक्षा का उद्देश्य 'सर्वधर्म समाज की भावना' का विकास करना होगा और यदि कोई देश धर्म-सापेक्ष है तो शि किसी धर्म विशेष के प्रति व्यक्ति की आस्था उत्पन्न करनी होगी। ऐसे देश में सभी धर्मों के मूलभूत सिद्धान्तों की बजाय उसी धर्म के ही मूलभूत सिद्धान्त पढ़ाए जायेंगे।

◆◆◆

**5. हमारे देश के व्यक्ति तथा समाज से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण शैक्षिक उद्देश्य कौन-कौन से हैं? विवेचना कीजिये।**

*अथवा*

**भारत में वर्तमान समय में व्यक्ति तथा समाज से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण शैक्षिक उद्देश्य कौन-कौन से हैं? उल्लेख कीजि**

**उत्तर**–**(1) व्यक्ति सम्बन्धी उद्देश्य (Aims relating to individual)**–व्यक्ति यदि पूर्ण विकसित है, स्वस्थ परिवार-समाज-देश भी स्वस्थ होगा। यहाँ पर व्यक्ति सम्बन्धी उद्देश्यों का विश्लेषण करते हैं।

**(2) शरीरिक विकास (Physical development)**–शारीरिक स्वस्थता सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र को व्यवस्थित रख संस्कृत में कहा है 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्''। शरीर ही सभी कार्यों का सम्पादक है उसका स्वस्थ रहना आवश्यक है। नियामत एक तन्दुरूस्ती''। अच्छे स्वास्थ्य में हजारों गुणों का विकास होता है।

**आंग्ल भाषा में 'Health is wealth'**–स्वास्थ्य ही धन है। पं. जवाहर लाल नेहरू के विचार–जब तक हमारा श स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा तब तक हम वास्तव में अधिक मानसिक प्रगति नहीं कर सकेंगे।

**(3) मानसिक विकास (Mental development)**–भारतीय शिक्षा में मानसिक विकास पर विशेष बल दि है। मानसिक स्वास्थ्य विशेष महत्त्वपूर्ण है। हम मानसिक रूप से कल्याणकारी कार्य करें यह हमारी धारणा सदा रही है। **मनः शिव संकल्पमस्तु**''–हमारा मन कल्याणकारी कार्यों का संकल्प ले, यह धारणा मन की दृढ़शक्ति का परिचय देती है

**डॉ० राधाकृष्णन के विचार**–बौद्धिक विकास को शिक्षा का उद्देश्य बताया है।

**(4) चारित्रिक विकास (Character development)**–चारित्रिकता शिक्षा की रीढ़ है। परन्तु दुर्भाग्य है कि आज कमजोर है। 'मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येंषुलोष्ठवत्'–दूसरे की स्त्री मां के समान है, दूसरे का धन हमारे लिए नहीं धारणाएं बदल गई हैं।

शिक्षा का चरित्रिक ह्रास हो रहा है। चरित्र के विषय में स्वामी विवेकानन्द के विचार–यदि आपने उत्तम विचारों को करके उन्हें अपने जीवन एवं चरित्र का आधार बना लिया तो आप उस व्यक्ति से अधिक शिक्षित हैं जिसने सम्पूर्ण पुस्त को कण्ठस्थ कर लिया है।

भारतीय शिक्षा आयोगों एवं समितियों ने चारित्रिक विकास बल पर विशेष महत्त्व दिया। हरबर्ट स्पैन्सर एवं बरट्रेंड ने भी स्वीकार किया है कि चारित्रिक बल सबसे बड़ा बल है। स्वामी दयानन्द सरस्वती–''छात्रों को जितेन्द्रिय होना चा इन्द्रियजित होना चारित्रिक गुणों में महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

**(5) आध्यात्मिक विकास (Spiritual development)**–भौतिकवाद के भूत ने लोगों को वर्तमान एवं भवि लिए सोचने का अवसर ही नहीं दिया। केवल आज हम चार्वाक दर्शन के अनुयायी होते जा रहे हैं। जब तक जियो सुख से ऋण करके मौज करो, यह शरीर फिर नहीं मिलने वाला, यह धारणा गलत है। भारतीय शिक्षा सत्यं-शिवं-सुन्दरम् का ज्ञान है। परा-अपरा विधाओं के माध्यम से ब्रह्म चिन्तन की ओर ले जाती है।

**स्वामी अरविन्द जी के विचार**–शिक्षा का उद्देश्य विकसित होने वाली आत्मा को सर्वोत्तम प्रकार से विकास करने में स देना और श्रेष्ठ कार्य के लिए योग्य पात्र बनाता है।

सांस्कृतिक विकास (Cultural development)–आदर्श, परम्पराओं, मान्याताएं किस रूप में आदर्श रूप लें नकी स्थापना पुनः करना शिक्षा का उद्देश्य है। ओटावे (Ottaway) के विचार–"समाज के सांकृतिक मूल्यों और प्रतिमानों को अपने तरुण और कार्यशील सदस्यों को प्रदान करना है।"

व्यक्तित्व का विकास (Development of personality)–व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया से हम बहुद्देशीय विकास भी कह सकते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific Attitude)–वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन है। हर विकासशील विज्ञान कला, संस्कृति के आधार पर विकास कर रहे हैं। औद्योगिकी, व्यावसायिकी, मनोवैज्ञानिकी, विधाओं का ज्ञान आवश्यक है।

नी विवेकानन्द–हमारे लिए पश्चिमी विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है तथा हमें तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता है, रे देश के उद्योगों का विकास हो।

अवकाश का उचित प्रयोग (Poroper use of leisure)–शिक्षा के क्षेत्र में इसका समुचित उपयोग आवश्यक आवकाश का उपयोग व्यवस्थित रूप से किया जाना चाहिए। व्यर्थ में गप्प-शप्प की अपेक्षा समय का सार्थक उपयोग लिए सत्साहित्य का अध्ययन आवश्यक है।

लियन (Napolean) के विचार–इन्होंने छात्रों के लिए कहा कि तुम अवसरों को सुधारो, प्रत्येक घंटा जो अब करते हो वह तुम्हारे भविष्य के लिये दुर्भाग्यपूर्ण है। *(Improve your opportunities. Every hour lost is a of future misfortune.)*

10) व्यावसायिक कुशलता की उन्नति (Improvement of Vocational Efficiency)–विदेशो में छात्र साय के साथ ही अध्ययन करते हैं। यहां भी ऐसी सुविधाएं एकत्रित की जा रही हैं। यहाँ पर यह भी मंतव्य है कि यन के समय ही अपने व्यवसाय का चयन करें और भावी जीवन की तैयारी कर लें।

11) जीवनयापन की कला में प्रवीणता (Initiation into the art of living)–जीवनयापन एक कला है। देश्य निश्चित होना चाहिए नहीं तो व्यक्ति जीवन भर भटकता रहता है। जीवन के लिए साहित्य-संगीत-कला का ज्ञान है। समाज के आदर्शों, व्यवहारों, क्रियाकलापों का ज्ञान छात्रों के लिए परमावश्यक है।

डॉ० राधाकृष्णन जी के विचार–**"हमें युवको को यथासम्भव सर्वोत्तम प्रकार के सर्वकार्य कुशल व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन शिक्षित करना चाहिए। उन्हें शिष्टाचार और समाज के अलिखित नियमों को अपनी इच्छा से मानना सीखना चाहिए।"**

## सम्बन्धी नैतिक उद्देश्य *(Educational Aims Relating to the Society)*

सी भी राष्ट्र का जब परिवर्तन होता है तो समाज में भी परिवर्तन होता है। शिक्षा समाज में नैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के रत हो जाती है।

समाजवादी समाज की स्थापना (Estabilshment of socialiste society)–प्रत्येक प्रजातांत्रिक राष्ट्र समाजवाद का संकल्प लेता है क्योंकि प्रजातंत्र में समाजवाद को ही महत्त्व दिया है।

1) समाजवादी समाज की स्थापना–सभी वर्गों को सभी क्षेत्रों में समान अवसर दिये जाते हैं, समाज की असमानता को या जाता है।

जवाहरलाल नेहरू के विचार–**"मैं समाजवादी राज्य में विश्वास करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि शिक्षा का इस उद्देश्य की त किया जाये।"**

2) सामाजिक दोषों का अन्त (Abolition of social evils)–समाज में व्याप्त बुराइयों का अन्त करना शिक्षा का

श्रीमती इन्दिरा गांधी के विचार–मैं यह चाहती हूँ कि जो आज प्रान्त के नाम से, भाषा के नाम से, मजहब के नाम से, के नाम से संकीर्ण भावनाएं बढ़ती जा रही हैं, इसके साथ ही छुआछूत अभी भी किसी-न-किसी रूप में है। हमे सबको माज की बुराइयों से लड़ना पड़ेगा तभी देश उन्नति कर सकेगा।

3) जन शिक्षा की व्यवस्था (Education for the masses)–देश को स्वतंत्र हुए 41 वर्ष हो गये परन्तु शिक्षा के पूरा नहीं कर सके। शिक्षा का उद्देश्य है कि ज्ञान का दीपक हर घर-आंगन को प्रकाशित कर सके।

**स्वामी विवेकानन्द के विचार**–मेरे विचार से जनता की **अवहेलना करना** महान राष्ट्रीय पाप है। कोई भी राजनीति उस स तक सफल नहीं होगी जब तक कि भारत की जनता एक बार फिर अच्दी तरह से शिक्षित नहीं हो जाती।

**(4) सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का समावेश (Inculcation of the spirit of social responsibility)** समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति आपस के सहयोग से ही होती है 'संगच्छवं' की भावना ही समाज को आगे ले जा सकती जब समाज का हर व्यक्ति परस्पर की भावना को नैतिकता की दृष्टि से देखेगा तभी समाज का उन्नयन हो सकता है।

**श्री लालबहादुर शास्त्री के विचार**–हमारा भारतीय समाज सदा ही एक-दूसरे के साथ जुड़ा रहा है। अनेक प्रकार के भारतीय समाज को एक साथ जोड़ते आये हैं। सामाजिक उत्तरदायित्वों की भावना का विकास भौतिकवादी युग में भी महत्त्वपूर्ण

**(5) निःस्वार्थ कार्य की भावना का समावेश (Inculcation of the spirit of selfless work)**–स्वार्थ परा ता से दूर हटकर निःस्वार्थ कार्य की प्रेरणा, स्काउट गाइड कैम्प एवं एन. एस. एस. आदि इस लक्ष्य को पूरा कर रहे हैं।

**डॉ० राधाकृष्णन–भारत माता आपसे आशा करती है कि आपका जीवन शुद्ध, श्रेष्ठ और निस्वार्थ कार्य के लिए अर्पित**

**(6) नेतृत्व के गुणों का विकास (Development of the qualities of leadership)**– बालकों को समुचि अवसर प्रदान कर विशेष अवसरों-समारोहों में कार्य-व्यवस्था उनके हाथों में देकर नेतृत्व के गुणों का विकास किया जा सकता

**माध्यमिक शिक्षा आयेग के विचार**–जनतांत्रिक भारत में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों व्यक्तियों में नेतृत्व के गुणों का विक करना है।

**(7) लोकतन्त्रीय नागरिकता का विकास (Development of democratice citizenship)**–लोकतंत्र के लि मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक गुणों की शिक्षा आवश्यक है। इन गुणों का विकास शिक्षा के अभाव में नहीं हो सकता अ इनके शिक्षण-प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था आवश्यक है। समाज में किसी भी प्रकार का जटिलतम विवाद न हो। समस्या होने विचार विनिमय के द्वारा समाधान किया जा सकता है या किया जाये।

**(8) भावात्मक एकता की प्राप्ति (Realization of Emotional Integration)**–भावात्मक एकता की उपल जनतान्त्रिक शिक्षा का एक उद्देश्य है। **''भावात्मक एकता का अर्थ है–राष्ट्र के विभिन्न भागों के व्यक्तियों को भावात्मक रूप एक रखना।''**

देश के किसी भी विवाद को भावात्मक एकता के माध्यम से सुलझाया जा सकता है।

**ड्यूटी के विचार**–जो कार्य शरीर के लिए भोजन और प्रजनन करते है वह कार्य सामाजिक जीवन के लिए शिक्षा करती भारत देश की परम्पराएं, रीति-रिवाज, धार्मिक संस्कार सभी को एक सूत्र में बांधकर रखे हुए हैं।

**(9) अन्तः-सांस्कृतिक भावना का विकास (Development of Inter-cultural understanding)**–ह भारत में प्राचीन सांस्कृतिक विचारधाराएं इस प्रकार से चल रही थीं, अभी भी चल रही हैं, जिससे हम एक हैं। चारों धाम, प तीर्थ, पावन धाराएं, नदियां, पतित पावन सांस्कृतिक कथायें, पर्व-व्रत-उपवास आदि ने हमको एक सूत्र में बांध रखा है आन्तरिक-सांस्कृतिक भावना से हम सब एक हैं। अतः इस प्रकार की भावना को विकसित किया जाना चाहिए।

**(10) अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान की वृद्धि (Promotion of International under-standing)**–संस्कृत भाषा यह अमरवाणी 'वसुधैव कुटुम्बकम्', सम्पूर्ण विश्व ही परिवार, अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास करती है। हमने कभी भी तेरा- का विचार भी नहीं किया।

**पं० जवाहरलाल नेहरू जी के विचार**–प्राचीन संसार बदल गया है और प्राचीन बाधाएं समाप्त होती जा रही हैं। जी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। हमें आने वाली अन्तर्राष्ट्रीयता में अपनी भूमिका निभानी है। इसके लिए संसार से सम आवश्यक है।

नेहरू जी ने अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान के लिए विश्वबन्धुत्व की भावना को बढ़ाना आवश्यक माना था। वास्तव में विश्वबन्धु की भावना ही देश की प्रगति में सहायक हो सकती है। इस उद्देश्य की पूर्ति शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है।

◆◆◆

**6. आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य कौन-कौन से हैं? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।**

*अथवा*

**शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का विभिन्न आयोगों, समितियों के द्वारा समय-समय पर जो निर्धारण किया है उसकी विस्तृत विवेचना कीजिये।**

*अथवा*

**स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ प्रमुख आयोगों, कमेटियों तथा समितियों द्वारा बताये गये शिक्षा से सम्बन्धित प्रमुख उद्देश्यों की विवेचना कीजिये।**

*अथवा*

**वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षा के उद्देश्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।**

**उत्तर**–समय-समय पर शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन होते रहे हैं। अब हमारे देश स्वतन्त्र हो गया है और हमने अंग्रेजों द्वारा चलाई गई शिक्षा प्रणाली को बदल कर स्वतन्त्र भारत के लोगों की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण किया है।

लोगों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को परखने के बाद शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करने के लिए भारत सरकार ने सबसे पहले माध्यमिक शिक्षा आयोग की 1953 ई० में नियुक्ति की, जिसने शिक्षा के कुछ उद्देश्य निश्चित किए। इसके बाद 1964 ई० में भारत सरकार ने कोठारी आयोग की नियुक्ति की, जिसने अपनी रिपोर्ट 1966 ई० में प्रस्तुत की थी। इन दोनों आयोगों द्वारा दिए गए उद्देश्यों का लेखा-जोखा करने से पहले हमें यह देखना होगा कि हमारे देश को वर्तमान युग में कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और स्वतन्त्र भारतवासियों की क्या-क्या आकांक्षाएं हैं? जिन समस्याओं से हमारा देश जूझ रहा है उनके नाम कुछ इस प्रकार हैं–

(क) तीव्र निर्धनता की समस्या।
(ख) विभिन्न प्रकार की बेरोजगारी की समस्या।
(ग) उत्पादन की प्राचीन विधियां।
(घ) नैतिक मूल्यों का पतन।
(ङ) चुनावों में गड़बड़ी।
(च) स्त्रियों की दुर्दशा तथा अपमान।
(छ) विद्यार्थियों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता।

इन्हीं समस्याओं को दूर करने के लिये स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश में शिक्षा के उद्देश्यों में बहुत से परिवर्तन हुए। भारत में शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न उद्देश्यों का निर्धारण विभिन्न प्रकार के शिक्षा-आयोगों तथा समितियों के द्वारा समय-समय पर किया। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कुछ प्रमुख आयोगों और कमेटियों तथा समितियों द्वारा शिक्षा के सम्बन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

**(1) ताराचंद समिति (1948)**–भाषा शिक्षण की समस्याओं के साथ ही देश की स्वंतत्रता की रक्षा, अखण्डता का ध्यान रखते हुए सर्वतोमुखी विकास की ओर विशेष बल दिया।

**(2) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) अध्यक्ष राधाकृष्णन (University education commission)**–प्रजातान्त्रिक देश के विकास से सम्बन्धित तत्वों की ओर विचार किया गया–**"प्रजातंत्र का जीवन स्वयं सामान्य व्यवसायिक तथा जीविकोपार्जन सम्बन्धी शिक्षा के उच्च स्तर पर निर्भर होता है। ऐसी स्थिति में विश्वविद्यालयों का कर्त्तव्य शिक्षा का प्रचार, नवीन ज्ञान की प्राप्ति की आकांक्षा में वृद्धि, जीवन के साथ को प्राप्त करने का प्रयत्न और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।**

**(3) माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा प्रस्तुत किये गये उद्देश्य निम्नलिखित हैं–**

I. प्रजातान्त्रिक नागरिकता का विकास
II. व्यावसायिक कुशलता का विकास
III. व्यक्तित्व का विकास।
IV. नेतृत्व का विकास

**I. प्रजातान्त्रिक नागरिकता का विकास**–प्रजातन्त्र में नागरिकता एक बहुत आवश्यक तत्त्व है, जिसके लिए प्रत्येक नागरि को ध्यानपूर्वक प्रशिक्षिण करने की आवश्यकता है। इसमें बहुत से बौद्धिक, सामाजिक तथा नैतिक गुण आते हैं, जिन्हें शिक्षा रा विकसित किया जा सकता है, जैसे–

**(i) स्पष्ट चिंतन**–शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट चिंतन तथा नये विचारों को ग्रहण करने के गुणों का विकास होना चाहिए, ता व्यक्ति में बौद्धिक शक्ति का विकास हो। जिसकी सहायता से वह सत्य तथा असत्य और 'तथ्यों तथा प्रचार' में अन्तर कर स एवं धार्मिक हठ और पक्षपात की हानिकारक अपील को ठुकरा दे।

**(ii) बोलने तथा लिखने में स्पष्टता**–स्पष्ट चिंतन के साथ-साथ स्वतंत्र वाद-विवाद, प्रेरणा तथा विचारों के शांतिपू आदान-प्रदान के लिए बोलने तथा लिखने में स्पष्टता होनी चाहिए।

**(iii) समुदाय के साथ रहने की कला**–शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को दूसरों के साथ रहना और मेलजोल रखते हुए क्रियात्म अनुभव द्वारा सहयोग की कला की कद्र करना सीखना चाहिए। ये गुण हैं–(क) अनुशासन, (ख) सहयोग, (ग) सामाजि सूक्ष्मग्राहिकता तथा (घ) सहनशीलता।

**(iv) सच्ची देश भक्ति की भावना**–शिक्षा का एक और उद्देश्य सच्ची देश-भक्ति की भावना का विकास है। सच्ची देशभक्ति में निम्न तीन बातें आती हैं–

(क) अपने देश की सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्राप्तियों के प्रति सच्चे प्रेम की भावना।

(ख) देश की त्रुटियों को स्वीकार करना तथा उनको दूर करने का प्रयत्न करना।

(ग) राष्ट्रीय हितों के लिए अपने स्वार्थों का त्याग कर देश की सेवा का निश्चय करना।

**(v) विश्व नागरिकता की भावना का विकास**–वर्तमान संसार में मेरा देश गलत या ठीक से अधिक खतरनाक विचा और कोई नहीं। आज संसार में इतनी घनिष्ठता आ गई है कि कोई राष्ट्र अकेले रहने का साहस नहीं कर सकता। अतः विश्व नागरिकता उतनी ही महत्त्वपूर्ण हो गई है, जितनी की राष्ट्रीय नागरिकता।

**II. व्यावसायिक कुशलता की उन्नति**–इसमें निम्नलिखित बातें आती हैं–

**(i) कार्य के लिए नया रुझान पैदा करना**–हमें विद्यार्थियों में कार्य करने का नया रुझान पैदा करना चाहिए। ऐसा रुझा जो समस्त कार्य के प्रति आदर करना सिखाए।

**(ii) तकनीकी योग्यता तथा कुशलता की उन्नति**–कार्य के लिए नए रुझान के साथ-साथ तकनीकी योग्यता तथा शि के सभी स्तरों पर कुशलता को उन्नत करने की आवश्यकता है, ताकि हमारी शिल्पीय तथा तकनीकी उन्नति की योजनाओं लिए प्रशिक्षित व्यक्ति प्राप्त हो सकें।

**III. व्यक्तिगत विकास**–माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार हमारी शिक्षा प्रणाली का तीसरा प्रमुख उद्देश्य व्यक्तित्व क विकास है, जिसमें निम्नलिखित बातें आती हैं–

**(i) विद्यार्थियों में रचनात्मक शक्ति का विकास करना**–माध्यमिक शिक्षा आयोग ने विद्यार्थियों मं रचनात्मक शक्ति क विकास करने की सिफारिश की है, ताकि वे अपनी सांस्कृतिक विरासत का सत्कार कर सकें।

**(ii) उत्तम रुचियां पैदा करना**–विद्यार्थियों में उत्तम रुचियां पैदा करनी चाहिए, ताकि वे अपने अवकाश के समय या भा जीवन में इस विरासत को विकसित करने का प्रयत्न कर सकें।

**(iii) सांस्कृतिक धरोहर को आदर का स्थान प्रदान करना**–माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार देश की कला, शिल संगीत, नृत्य तथा शौक के विकास को आदर का स्थान दिया जाना चाहिए।

**IV. नेतृत्व के गुणों का विकास**–प्रजातन्त्र की सफलता के लिए नेतृत्व के गुणों का विकास करना आवश्यक है। शि विद्यार्थियों को अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए जागरूक करे। उन्हें नेतृत्व करने तथा अनुसरण करने का प्रशिक्षण दि जाए। हमारी शिक्षा का कर्तव्य है कि वह व्यक्तियों को समुदाय के छोटे समूहों या स्थान के सामाजिक, राजनीतिक, शिल्पी अथवा सांस्कृतिक क्षेत्रों में नेतृत्व का दायित्व समझाने का प्रशिक्षण दे।

**(4) माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952-53 (Secondary Education Commission, Mudlia Commission)**–"शिक्षा व्यवस्था को आदतों, दृष्टिकोणों और चरित्र के गुणों के विकास में अपना योगदान प्रदान कर होगा, जिससे कि नागरिक जनतन्त्रीय नागरिकता के दायित्वों का योग्यतापूर्णक निर्वाह कर सकें एवं उन ध्वांसात्मक प्रवृत्तियों क विरोध कर सकें जो व्यापक राष्ट्रीय और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के विकास में बाधक हैं।"

**संस्कृत आयोग (1956)**–अध्यक्ष सुनीति कुमार चटर्जी–शिक्षा में आध्यात्मिकता के साथ ज्ञान-विज्ञान की शि
[illegible] को महत्त्व प्रदान किया गया।

**[illegible] भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (1965)**–माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में परिवर्तन करके सोद्देश्य शिक्षा
[illegible] बालकों के व्यक्तित्व विकास के लिए कार्य।

**केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद (1957)**–शिक्षा का केन्द्रीयकरण कर सम्पूर्ण देश में एक शिक्षा पर बल दिया गय
**राष्ट्रीय एकता परिषद, (1961)**–अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा गांधी सार्वभौमिक शिक्षा पर बल दिया गया, राष्ट्रीय एक
[illegible] बनाया गया।

**[illegible]त्मक एकता परिषद् (1961-62)**–असम्पूर्ण मंद शिक्षा की सर्वव्यापकता को मान्यता देते हुए विस्तृत क्षेत्र।
**पाठ्यक्रम का प्रतिपादन**

**1964 ई० में कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताए–**

(i) उत्पादन में वृद्धि करना
(ii) सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता
(iii) आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा
(iv) सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का विकास

कोठारी ने इन उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के लिए कुछ सुझाव भी दिए हैं, जो इस प्रकारहैं–

**उत्पादकता में वृद्धि का उद्देश्य**–भारतीय शिक्षा आयोग ने देश के साधनों को विकसित करने तथा प्रयोग करने पर
[illegible] बल दिया है। राष्ट्रीय आय को बढ़ाने के लिए उत्पादन में वृद्धि करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। किसी
[illegible] ने सच ही कहा है कि भारत एक धनी देश है, जिसमें निर्धन लोग रहते हैं। इस कथन का अर्थ यही है कि वे सब चीजों
[illegible], क्षेत्र, खनिज पदार्थ, उपजाऊ भूमि, नदियां, पर्वत, वन सम्पदा आदि ऐसे साधन है, जो भारत में पर्याप्त मात्रा में
[illegible] तथा जिन पर कोई भी राष्ट्र गर्व कर सकता है, परन्तु भारत में निर्धन लोग इसलिए रहते हैं कि इन प्राकृतिक साधनों
[illegible] प्रकार से विकास और उपयोग नहीं किया जा रहा है। यदि इन साधनों का उचित प्रयोग होने लगे तो हमारे देशवासियों
[illegible] स्तर ऊपर उठ सकता है और इसके लिए आवश्यकता है उचित शिक्षा की। उचित प्रकार की शिक्षा उत्पादकता को
[illegible] सकती है। उत्पादकता और शिक्षा में सम्बन्ध विकसित करने के लिए कोठारी आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दिए हैं–

**विज्ञान शिक्षा को प्रोत्साहन देना**–विज्ञान स्कूल की शिक्षा का एक प्रमुख भाग होना चाहिए और इसे विश्वविद्यालय
[illegible] पाठ्यक्रमों का अंग होना चाहिए। कोठारी आयोग ने न केवल विज्ञान के शिक्षण को प्रोत्साहन देने की सिफारिश
[illegible] विद्यार्थियों के अंदर वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने के लिए भी जोर दिया है।

**कार्य-अनुभव**–कोठारी आयोग के अनुसार–कार्य-अनुभव से तात्पर्य है–स्कूल, घर, कार्यशाला, खेत, कारखाने आदि
[illegible] कार्य में भाग लेना।

[illegible] आयोग के अनुसार उद्देश्यपूर्ण शिक्षा में निम्नलिखित चार बातें सम्मिलित हैं–

(i) साक्षरता अर्थात् भाषाएं और मानवीय तथा सामाजिक विज्ञान।
(ii) गणना अर्थात् गणित तथा प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन।
(iii) कार्य अनुभव।
(iv) समाज सेवा।

[illegible] ने 'कार्य-अनुभव' तथा 'समाज सेवा' की पूर्ण उपेक्षा पर असन्तोष प्रकट किया है। कार्य-अनुभव शिक्षा और कार्य
[illegible] स्थापित करने का साधन है और यह आधुनिक समाज के लिए आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक समाज विज्ञान पर
[illegible] तकनीक को अपना रहा है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा के अन्य तत्त्वों के साथ 'कार्य-अनुभव' को भी महत्त्वपूर्ण
[illegible] मिलना चाहिए। इनके अग्रलिखित लाभ हैं– –

(i) इससे शिक्षा और उत्पादकता में सम्बन्ध स्थापित होगा। यह सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का साधन है।
(ii) इससे प्राचीन शिक्षा की उस त्रुटि को दूर करने में सहायता मिलेगी, जो 'कार्य' और 'अध्ययन' में व्यवधान पैदा करती है।
(iii) इससे औपचारिक शिक्षा के अतिशैक्षणिक प्रवृत्ति में कमी होगी।

(घ) इससे बौद्धिक तथा हस्तकार्य का अन्तर समाप्त होगा।

(ङ) इससे नवयुवकों को रोजगार प्राप्त करने में सुविधा होगी और वे अपने समाज में ढ़ाल लेंगे।

(च) इससे विद्यार्थियों की उत्पादक प्रक्रिया तथा वैज्ञानिक प्रयोग में गम्भीर अन्तर्दृष्टि प्राप्त होगी तथा उनमें परिश्रम क की आदत का निर्माण होगा, परिणामस्वरूप राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होगी।

(छ) सबसे बड़ी बात तो यह है कि कार्य अनुभव व्यक्ति और समाज के परस्पर सम्बन्ध को दृढ़ बनाता हुआ सामा तथा राष्ट्रीय एकता में सहायक सिद्ध होगा।

कार्य-अनुभव को टैक्नोलोजी उद्योग तथा कृषि के साथ सम्बन्धित करने का पूरा प्रयास करना चाहिए। इसका अ उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी की शिक्षा तब तक पूर्ण न समझी जाए जब तक वह जीवन की वास्तविक स्थिति में किसी प्रका कार्य-अनुभव में भाग नहीं लेता। इससे राष्ट्र को बहुत लाभ हो सकता है। कार्य-अनुभव के प्रति यह प्रगतिशील दृष्टिकोण देश के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जो औद्योगिकीकरण की ओर अग्रसर है।

**(ज) माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण आवश्यक**–माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अधिकांश विद्यार्थी अपनी प छोड़ देते हैं। परम्परागत पाठ्यक्रम द्वारा पढ़े हुए विद्यार्थी, व्यावसायिक दृष्टिकोण से किसी काम के नहीं रहते। इसलिए माध्य शिक्षा को व्यावसायिक रूप देने का हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए। इससे शिक्षा का उत्पादकता के साथ सम्बन्ध बढ़ेगा। भ जैसे देश के लिए तो यह और भी आवश्यक है, क्योंकि यहां पर शिक्षा अब तक 'सफेद कालर' वाले बाबू ही पैदा करती आई माध्यमिक शिक्षा में क्रियात्मक विषय आरम्भ करने से विद्यार्थी का ध्यान जीवन की विभिन्न दिशाओं की ओर जायेगा। आधु भारतीय समाज जो औद्योगीकरण की ओर अग्रसर है, के लिए यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय स्तर पर भी व्यावसायिक शि विशेषकर तकनीकी और कृषि शिक्षा का विस्तार किया जाए।

**(2) सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा**–जब किसी राष्ट्र के नागरिक स्थान, वेश-भूषा, खान-पान, रहन-स भाषा साहित्य, मूल्य-मान्यताओं, जाति, समूह और धर्म आदि अन्तर होते हुए भी अपने को एक समझते हैं और राष्ट्र-हित के अपने व्यक्तिगत तथा सामूहिक हितों का त्याग करते हैं तो इस भावना को राष्ट्रीय एकता कहते हैं। भारत विभिन्न सामा समूहों का देश है। इन समूहों में समन्वय राष्ट्रीय एकता का आधार है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता शिक्षा का एक महत्त उद्देश्य है। कोठारी आयोग ने शिक्षा द्वारा राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए हैं–

**(क) सामान्य स्कूल प्रणाली की व्यवस्था**–आजकल प्रायः दो प्रकार के स्कूल देखने में आते हैं–

*(i)* सरकारी स्कूल जो या तो निःशुल्क होते हैं या जहां शिक्षा सस्ती है।

*(ii)* पब्लिक स्कूल, जहां शिक्षा का स्तर तो अच्छा है परन्तु शिक्षा इतनी महंगी है कि आम आदमी के बस की बात न

इसलिए बीच का रास्ता है–'सामान्य स्कूल प्रणाली'। भारत की आधुनिक समाज व्यवस्था में व्यापक विभिन्नता है। स्थिति में शिक्षा का यह दायित्व है कि वह विभिन्न वर्गों तथा समूहों को एक-दूसरे के निकट लाकर सामाजिक एकता की भा को विकसित करे, परन्तु दुःख की बात तो यह है कि ऐसा करने की बजाय शिक्षा सामाजिक विघटन तथा वर्ग-भेद की भावना बढ़ावा दे रही है। आयोग का सुझाव है 'यदि हमारी शिक्षा प्रणाली को राष्ट्रीय विकास, विशेषकर सामाजिक एवं राष्ट्रीय ए का सशक्त साधन बनाना है, तो हमें जन-शिक्षा की सामान्य प्रणाली की ओर बढ़ना होगा। इस प्रकार की प्रणाली–

*(i)* जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि के भेदभाव के बिना सबके लिए प्राप्त होगी।

*(ii)* जहां अच्छी शिक्षा का आधार धन नहीं होगा, बल्कि प्रतिभा होगी।

*(iii)* जिसके अनुसार सभी स्कूलों में एक पर्याप्त स्तर निश्चित किया जाएगा और न्यासंगत अनुपात में गुणात्मक-शि दिया जाएगा।

*(iv)* जहां कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

*(v)* जो औसत माता-पिता की आवश्यकताओं के अनुकूल होगी।

कोठारी आयोग ने सुझाव दिया कि यह शिक्षा प्रणाली सुनियोजित कार्यक्रम के द्वारा 20 वर्षों में क्रमशः कार्यान्वित की जाए

**(ख) सामाजिक तथा राष्ट्रीय सेवा आधुनिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग**–कोठारी आयोग के अनुसार राष्ट्रीय सेवा भी आधु शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय-सेवा कार्यक्रम राष्ट्रय एकता की भावना का विकास करने में सहायक होते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने शिक्षित तथा अशिक्षित वर्गों में व्यवधान उत्पन कर रखा है। इस बुराई को दूर

के लिए आयोग ने सुझाव दिया है कि सभी विद्यार्थियों के लिए किसी न किसी प्रकार की राष्ट्रीय सेवा या सामाजिक सेवा की आवश्यक व्यवस्था होनी चाहिए और इसे शिक्षा के प्रत्येक स्तर का आवश्यक अंग बनना चाहिए। यह चरित्र निर्माण का सशक्त अंग बन सकता है। इससे अनुशासन में सुधार होगा, परिश्रम के प्रति श्रद्धा और विश्वास बढ़ेगा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास होगा। इसीलिए कालेजों और विश्वविद्यालयों में जो राष्ट्रीय सेवा योजना आरम्भ की गई है और जिसे स्कूलों में भी आरम्भ करने का प्रयत्न किया जा रहा है, वह योजना छात्रों के अन्दर समाज सेवा की भावना के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। वैसे कभी-कभी किसी क्षेत्र में भूचाल, बाढ़ या दुर्घटना के रूप में आपत्ति आ जाए तो विद्यार्थियों को वहां सहायता और सेवा के लिए भेजा जा सकता है। समाजसेवा अंशकालिक आधार पर होनी चाहिए। आयोग ने सुझाव दिया है कि यह सेवा दो रूपों में संगठित की जा सकती है–

(i) स्कूल या कालेज में ही समुदाय के जीवन में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरणा तथा योग्यता प्रदान करना।

(ii) सामुदायिक विकास तथा राष्ट्रीय सेवा के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए उचित अवसर प्रदान करना।

**(ग) भाषा नीति का विकास**–भाषावाद राष्ट्रीय विघटन का एक महत्त्वपूर्ण कारण है। भाषा नीति के निर्माण हेतु **कोठारी आयोग** ने निम्नलिखित सुझाव दिए है–

(i) इस बात को महसूस करते हुए कि भाषा नीति का उचित विकास सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकता में सहायताकर सकता है, स्कूल और कॉलेज स्तर पर मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाना चाहिए। स्कूली तथा उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा का माध्यम एक ही होना चाहिए और इसके लिए प्रादेशिक भाषा या मातृ-भाषा ही अधिक उपयोगी है।

(ii) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से विश्वविद्यालयों को प्रान्तीय भाषा में विज्ञान और तकनीकों की पुस्तकों को तैयार करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

(iii) अखिल भारतीय संस्थाओं को तब तक अंग्रेजी की शिक्षा का माध्यम रखना चाहिए, जब तक कि हिन्दी इसका स्थान ग्रहण नहीं कर लेती।

(iv) जितना शीघ्र हो सके प्रादेशिक भाषाओं को सम्बन्धित राज्यों की भाषा बना देना चाहिए।

(v) *अंग्रेजी* का शिक्षण स्कूल-स्तर से ही जारी रहना चाहिए और उसका विकास भी होना चाहिए। अन्य अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं के अध्ययन के लिए भी प्रोत्साहन देना चाहिए। *आधुनिक विज्ञान* और टैक्नोलोजी के अध्ययन के लिए रूसी भाषा विशेष तौर पर तथा दूसरी भाषाओं की ओर ध्यान देना चाहिए।

(vi) विश्वविद्यलाय स्तर पर एक ऐसा विभाग होना चाहिए जिसकी शिक्षा का माध्यम विश्व की महत्त्वपूर्ण भाषा हो।

(vii) उच्चतर शिक्षा में शैक्षणिक कार्य और बौद्धिक विचार के लिए अंग्रेजी सम्पर्क भाषा रहेगी। कुछ समय के पश्चात् हिन्दी को यह स्थान ले लेना चाएिह, क्योंकि हिन्दी केन्द्र की सरकारी भाषा है और लोगों की सम्पर्क भाषा हे, इसलिए गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में इसके प्रसार के लिए सभी साधन अपनाए जाने चाहिएं।

(viii) हिन्दी के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय प्रसारण के लिए सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं को प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए स्कूलों तथा कालेजों में विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं के शिक्षण की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक विश्वविद्यालय में इन भाषाओं के विभाग खोले जाने चाहिएं।

**(घ) राष्ट्रीय चेतना को विकसित करना**–भारत एक विशाल देश है, जिसमें हर प्रकार की विविधता पाई जाती है। विद्यार्थियों को इस विविधता में एकता देखने की योग्यता प्रदान करके स्कूल राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह सांस्कृतिक परम्परा के ज्ञान के विकास तथा उसके पुनर्मूल्यांकन और भविष्य में प्रगतिशील विश्वास के द्वारा ही किया जा सकता है।

(i) सांस्कृतिक परम्परा को अच्छी प्रकार से समझने तथा उसका पुनर्मूल्यांकन करने के लिए भारत की भाषाओं, साहित्य, दर्शन, धर्म, इतिहास के शिक्षण का सुव्यवस्थित प्रबन्ध होना चाहिए। विद्यार्थियों को भारतीय शिल्पकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत एवं नाटक कला में भी शिक्षण मिलना चाहिए। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम में भारतवर्ष के विभिन्न भागों का अध्ययन सम्मिलित करके उनके सम्बन्ध में सूझबूझ को प्रशंसात्मक स्तर तक बढ़ाया जा सकता है। अन्तर्राज्यीय स्तर पर अवकाश-शिविर और ग्रीष्मकालीन अध्ययन आयोजित करके प्रादेशिक एवं भाषाई बाधाओं को तोड़ा जा सकता है।

(ii) भविष्य के प्रति सशक्त विश्वास उत्पन्न करने के लिए विद्यार्थियों को संविधान के आदर्शों से अवगत कराना चाहिए। उनकी प्रस्तावना में वर्णित महान मानवीय आदर्शों के प्रति सचेत करना चाहिए और उस लोकतन्त्रात्मक समाजवादी समाज के रूप में ज्ञान देना चाहिए, जो हम राष्ट्रीय विकास की पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा बनाना चाहते हैं।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास करना भी बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय चेतना तथा अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विक लिए कार्य करना चाहिए, क्योंकि इन दोनों में परस्पर कोई विरोध नहीं। स्कूल में मानवीय तथा सामाजिक के द्वारा राष्ट्रीय चेतना के साथ अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास भी करना चाहिए।

(iv) प्रजातन्त्रात्मक मूल्यों का निर्माण करने के लिए भी स्कूल तथा महाविद्यालयों के शिक्षा कार्यक्रमों में पर्याप्त व होनी चाहिए।

**(3) आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा**–आधुनिकीकरण से हमारा तात्पर्य है कि उत्पादन में नवीनतम तकनीक का और सोचने के ढंग में परिवर्तन। आज न केवल कृषि और उद्योग में नवीन वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग किया जा रहा है, सामाजिक सम्बन्धों में भी हमारे अन्दर वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो रहा है। इस मामले में भारत को दूसरे पश्चिम के पीछे लंगड़ाते हुए नहीं चलना है। भारत को आधुनिक संसार के साथ मिलने के लिए आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दि

(i) शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में जिज्ञासा का विकास होना चाहिए, उचित रुचियों तथा प्रवृत्तियों का निर्माण होना और स्वतन्त्र अध्ययन तथा अपने आप चिंतन करने तथा निर्णय लेने की योग्यता का विकास होना चाहिए

(ii) शिक्षा द्वारा पर्याप्त एवं कुशल विद्वानों का निर्माण होना चाहिए जो आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा कर

**(4) सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास**–शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली को बुनियादी, सामाजिक, नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों के निर्माण और विकास पर बल देना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दिए

(i) केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों को अपनी संस्थाओं में नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा करनी चाहिए। इसके बारे में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने कुछ सुझाव दिए है। निजी संस्थाओं को भी उन का अनुसरण करना चाहिए।

(ii) सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के लिए स्कूल की समय-सारणी में समय निश्चित चाहिए। इसके लिए विशिष्ट अध्यापकों को नियुक्त करने की आवश्यकता नहीं। साधारण अध्यापकों द्वारा प्रकार का शिक्षण दिया जा सकता है।

(iii) विश्वविद्यालयों में धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए विभाग स्थापित करने चाहिएं जो शिक्षा के इस पक्ष की विशेष ध्यान दें और इन मूल्यों को बुद्धिमतापूर्ण तथा प्रभावशाली ढंग से विकसित करने के साधनों का सुझाव

(iv) भारत धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक राज्य है, जहां विभिन्न धर्म विकसित हो रहे हैं। इसलिए सभी धर्मों का तुलापूर्ण अध्ययन आवश्यक है, ताकि यहां के नागरिक एक-दूसरे को समझ सकें, और मिल-जुल कर प्रेमपूर्व सकें। नागरिकता के कोर्स में या सामान्य शिक्षा में भी मुख्य धर्मों की विशिष्ट बातों को पाठ्यक्रम में सम्मि करना चाहिए और इसे स्कूलों तथा कॉलेजों की पहली डिग्री में आरम्भ करना चाहिए। इस पाठ्यक्रम में वि सभी मुख्य धर्मों की समानताएं सम्मिलित हैं।

**सारांश (Conclusion)**–शिक्षा का अपना अस्तित्व है चाहे वह शिक्षा औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक हो, साथ ही शिक्षा अपने विभिन्न उद्देश्यों, तत्वों, प्रारूपों के द्वारा समाजोपयोगी बनकर राष्ट्रीय हित का कार्य करती है। शि उद्देश्य सर्वांगीण विकास है जिसे वह पूरा करती है।

**टी० रेमांट (T. Raymont)**–**"एक अलग-थलग व्यक्ति केवल कल्पना की उपज है। हम ऐसे व्यक्ति के सम्ब सोच भी नहीं सकते जो समाज से अलग रहकर विकास कर रहा हो।"** व्यक्ति यह विकास समाज में रहकर ही कर सकत

**जॉन ड्यूवी (John Dewey)**–सामाजिक जीव होने के नाते मनुष्य एक नागरिक है जो क्रिया-अनुक्रिया और सम्बन्धों के व्यापक क्षेत्र में विकास और चितंन करता है। *(As a social being he is citizen growing and thin in vast complex of interactions and relations.)*

**हुमायूं कबीर**–भारतवर्ष में शिक्षा के द्वारा प्रजातांत्रिक चेतना, वैज्ञानिक खोज और दार्शनिक सहिष्णुता का निर्माण जाना चाहिए। केवल तभी हम उन परम्पराओं के उचित उत्तराधिकारी होंगे जिसका निर्माण इस देश में अतीत में हुआ है। तभी हम उस आधुनिक विरासत में अपना भाग पाने के अधिकारी होंगे, जो विश्व के समस्त राष्ट्रों की विरासतों को एक का प्रयत्न करती है।

*(Education in India must create the spirit of democracy, scientific enquiry and philos tolration. Thus alone can we be the rightful inheritors of the glorious traditions which have left share in the modern heritage which seeks to combine the contributions of peoples throg the world.)*

शिक्षा के विभिन्न सन्दर्भों की चर्चा करते हुए हमें आज भी डॉ० राजेन्द्र प्रसार की याद आती है। उनके विचार–

**"भारत को अपने लिए एक ऐसी शिक्षा का चुनाव करना है, जो हमारी प्राचीन संस्कृति में जो कुछ अच्छा है, उससे प्रेरण और साथ ही वर्तमान युग की उपेक्षा न करे।"** *(Indian has to choose for herself a culture that derives piration form what is noble in our ancient culture and at the same time does not ignore the ands of the present age.)*

अतः शिक्षा वह है जो भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों कालों में सामंजस्य स्थापित करती है।

भूत के आदर्शों को लेकर वर्तमान में अनुपालन एवं भविष्य की योजना।

◆◆◆

Sem=I
Paper=III
Unit=II

## अन्तर अध्ययन क्षेत्र ज्ञान के रूप में शिक्षा
## (Education as Interdisciplinary Knowledge)

## 1.3 शिक्षा की अन्तर अध्ययन क्षेत्र प्रकृति
## (Interdisciplinary Nature of Education)

**शिक्षा की अंतर अध्ययन क्षेत्र प्रवृत्ति का वर्णन कीजिए।**
**(Decribe Interdisciplinary nature of education.)**

उत्तर–अन्तर अध्ययन क्षेत्र उपागम के साथ शिक्षा कई रूपों में उपयोगी होती है। शिक्षा की अंतर अध्ययन क्षेत्र प्रवृत्ति–

1. **अधिगम में वृद्धि**–विद्यार्थी को व्यस्त रखना, उनकी मदद करना, ज्ञान का विकास, अंर्तदृष्टि, समस्या समाधान, आत्मविश्वास, स्वक्षमता तथा अधिगम करने की इच्छा शक्ति को बढ़ाना ही अंतर अध्ययन क्षेत्र उपागम व शैक्षिक प्रशिक्षण का कक्ष-कक्ष में मुख्य उद्देश्य होता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति अंतर अध्ययन क्षेत्र अनुदेशन का विस्तारीकरण करना है। केपको (2009) इस बात पर जोर देते हैं कि अंतर अध्ययन क्षेत्र अनुदेशन विद्यार्थी में उत्तरोत्तर संज्ञानात्मक क्षमता व शैक्षिक अनुसन्धान में मदद करता है तथा निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित करता है–

1. पहचान
2. आलोचनात्मक सोच
3. अस्पष्टता को सहना
4. नैतिक चिंता को सराहना व स्वीकार करना।

(i) अन्तर अध्ययन क्षेत्र विद्यार्थी के पूर्वाग्रह को पहचानने में सहायक होता है। यह विद्यार्थी को अनुदेशन के माध्यम से समझने का प्रयास करता है। यह वर्तमान में हो रही नवीन घटनाओं व नवीन विज्ञान की उन्नति के द्वारा विद्यार्थी में अधिगम क्षमता को शक्तिशाली बनाने में सहायक होती है। अंतर अनुशासनात्मक उपागम पूर्व में समाहित अधिगम क्षमता को अधिक शक्तिशाली बनाकर अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से बालकों में विचारों को उद्वेलित करता है। यह अध्ययन क्षेत्र अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में दो तरीके अपनाता है–

(a) विद्यार्थी की अर्न्तदृष्टि को पहचान कर समझ को बढ़ाने में अध्ययन क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान होता है।

(b) विद्यार्थी में कई अध्ययन क्षेत्रों को एकत्रित करने की अवधारणा व विचारों को अन्य अध्ययन क्षेत्र के सन्दर्भ में विस्तृत अवधारणात्मक रूप रेखा व विश्लेषण करना।

(ii) अन्तर अनुशासनात्मक शिक्षण उन्नत आलोचनात्मक विचार व संज्ञानात्मक विकास में सहायक होता है। अंतर अनुशासनात्मक अनुदेशन विद्यार्थी की संज्ञानात्मक क्षमताओं, मस्तिष्क आधारित कौशल व मानसिक क्रियाओं जो कार्य को पूरा करने में आवश्यक है को विकसित करता है। अंतर अध्ययन क्षेत्र विद्यार्थियों में निम्न योग्यतायें व क्षमताएँ विकसित करने में सहायक है–

(a) विभिन्न परिप्रेक्ष्य में विषय या प्रकरण को भिन्न-भिन्न विचारधाराओं व घटनाओं के आधार पर समझना;

(b) संरचनात्मक ज्ञान विकसित करना–उद्घोषणा ज्ञान व प्रक्रियात्मक ज्ञान।